भूमंडलीकरण के दौर में महिलाओं की दशा एवं दिशा (एक समाजशास्त्रीय अध्ययन)

डॉ. वीरेन्द्र कुमार*
अर्चना कुमारी*

आज का समय सांस्कृतिक संक्रमण, उपभोक्तावाद भूमण्डलीकरण और उदारीकरण का है। राष्ट्र, समाज, मानवता और यहाँ तक कि मानव का व्याकरण तेजी से बदल रहा है। बदलाव के दौर में समाज में नारी की स्थिति भी बदल रही है। एक समय वह अबला समझी जाती थी और शिक्षा के बहुत सारे प्रतिबन्ध झेलने पड़ते थे और उसे पर्दे में रहकर जो कुछ भी सीखना होता था, सीखना पड़ता था। आज के भूमण्डलीकरण के दौर में महिलाओं की स्थिति बदली है।

आधुनिक भूमण्डलीकरण के दौर में स्त्री का शरीर व्यापार मुख्य आकर्षण बन गया है। विज्ञापन, संचार, फिल्म, टी0वी0, पत्र–पत्रिकाओं में नारी के अंगों का खुला प्रदर्शन हो रहा है। बेखौफ अश्लील फिल्में बन रही हैं। नारियाँ क्लबों में अमर्यादित कृत्य कर रही है। ऐसे में यह कहना कि, कहीं न कहीं कुछ दोष इस आधुनिक फैशन परस्त नारियों का भी है। साथ ही नारी शिक्षा भी, नारी शिक्षा के प्रति एक समरसता दृष्टिकोण विकसित करने में सहायक सिद्ध हुई है। उनकी धारणा भी बदल रही है वे विज्ञान तकनीकी, चिकित्सा, सूचना तकनीकी, फिल्म, पत्रकारिता, खेल, साहित्य, समस्त सरकारी, गैर सरकारी सेवाओं और राजनीति में बराबर की भागीदारी करने लगी है। परिवर्तन प्रकृति का नियम है विकास धीमी एवं समय लेने वाली लम्बी प्रक्रिया है जिसे कोई रोक नहीं सकता, हाँ केवल उसकी गति प्रभावित कर सकता है। यद्यपि पुरूष प्रधान भारतीय समाज में पुरूष नारी को आज भी उपभोग की वस्तु के रूप में देखना चाहता है ''अहं ब्रह्म स्वरूपिनी मन्तः प्रकृति पुरूषात्मकं जगत।'' देवयर्थशीर्षम, दुर्गासप्तशती, गीता प्रेस उपरोक्त सूक्त में अत्यन्त गौरवमयी ढंग से मातृ सत्ता की अभिव्यक्ति हुई है।

ब्रह्म द्वारा रचित ब्रह्माण्ड में नारी की रचना अनुपमेय है। ऐसा भी माना जाता है कि ब्रह्म स्वयं ही अपने मायारूपी समस्त वैभव के साथ ही स्त्री रूप में प्रकट हुआ है। ''एक नहीं दो–दो मात्राएँ नर से भारी नारी'' जैसे सामान्य कथन

***अध्यक्ष, समाजशास्त्र विभाग निलाम्बर–पीताम्बर विश्वविद्यालय मेदनीनगर, पलामू**

***शोध छात्रा (समाजशास्त्र)नी.पी. विश्वविद्यालय, मेदीनीनगर पलामू (झारखंड)**

से भी प्रकट है कि सृष्टि रचना व्यवस्था की चरम व परम निष्पत्ति के रूप में नारी को ही देखा जाता है। अज्ञानी जन ही नारी की महत्ता को कम आंकते हैं। ''अबला तेरी यही कहानी, आँचल में दूध और आँखों में पानी'' वस्तुतः नारी जो मात्र सबला ही नहीं प्रत्युत सभी बलशालियों का उपादान कारक भी है। के सत् (वास्तविक) स्वरूप का चित्रण नहीं करता बल्कि वह तो स्त्री जगत के सन्दर्भ में गढ़े गये पाश्चात्य दृष्टिकोण Frality the name is women का ही मात्र हिन्दी रूपान्तरण है जिसे भावों की डोर में पिरोकर लोगों के समक्ष प्रस्तुत किया गया हे। स्त्री अथवा नारी को महिला सम्बोधन ही प्राप्त है।

स्पष्ट है कि मह, इलच, आ (प्रत्यय) महिला शब्द व्युत्पति के आधार पर हम देखते हैं कि महिला शब्द का अधारी तत्व मह है जो ज्येष्ठ अथवा पूज्य का ही द्योतक है। अपौरूपेय वांड़मय के मनमुखी व्याख्याकारों ने जिस मनु की आलोचना में अपनी सम्पूर्ण ऊर्जा बहा दी उसी मनु ने तो ''यत्र नार्यस्तु पूज्यंते रमन्ते तत्र देवताः'' (मनुस्मृति) कहकर नारी की गरिमा को और भी गौरवान्वित किया है। शक्तिशाली महिला की अवधारणा से सम्पूर्ण कहकर नारी की गरिमा को और भी गौरवान्वित किया है।

भूमण्डलीकरण का अर्थ एवं परिभाषाएँ

भूमण्डलीकरण एक बहुआयामी खुली अवधारणा है, जो व्यापार, प्रौद्योगिकी, उद्योग और अर्थव्यवस्था के रूपान्तर को सार्वभौमिक दिशा की ओर इंगित करती है। यह एक सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक प्रक्रिया भी है। इसमें सम्पूर्ण विश्व की विभिन्नता समाहित है। इसकी परिभाषा विभिन्न विद्वानों ने अपने–अपने ढंग से दी है। एन्थोनी गिडेन्स एवं हार्वे ने समय एवं स्थान के सन्दर्भ में इसे समझाने का प्रयास किया है। बेल स्टेन ने वैश्वीकरण को पूंजीवाद के संदर्भ में, रानेनाऊ ने तकनीकी तंत्र एवं विकास के रूप में, और गिलीपीन ने शक्ति की राजनीति के आलोक में समझाने का प्रयास किया है। रोबर्टस्टेन तथा मेलकॉम लाटर्स ने इसे बहुलक माना है। अध्ययन की सुविधा की दृष्टि से कुछ महत्वपूर्ण परिभाषाएँ निम्न हैं–

एन्थोनी गिडेन्स ने लिखा है ''भूमण्डलीकरण एक प्रक्रिया है जो आधुनिकता से जुड़ी संस्थाओं को सार्वभौमिक दिशा की ओर रूपान्तरित करती है।'' उन्होंने आगे लिखा है, ''विभिन्न व्यक्तियों तथा विश्व के विभिन्न क्षेत्रों के मध्य बढ़ती हुई अन्योन्याश्रयता या पारस्परिकता ही वैश्वीकरण है। यह अन्योन्याश्रयता या पारस्परिकता सामाजिक तथा आर्थिक सम्बन्धों में निहित है, इसमें समय तथा स्थान सिमट जाते हैं।'' इस परिभाषा से स्पष्ट होता है–(अ) वैश्वीकरण एक प्रक्रिया है। इस प्रक्रिया के कारण व्यक्ति विश्व से जुड़ा है। (ब) आधुनिकता का बहुत बड़ा परिणाम वैश्वीकरण है। (स) व्यक्ति जिस विश्व से जुड़े हैं, जिसमें जीवन–यापन कर रहे हैं उसमें अन्योन्याश्रयता बढ़ी है। स्थानीय तथा वैश्वीय लोग एक कड़ी में बंधे हैं।

उनके मध्य सम्बन्ध गहरे एवं घनिष्ठ हो रहे हैं। (द) वैश्वीकरण में समय और स्थान की दूरी सिमट जाती है।

हार्वे डी के अनुसार, ''भूमण्डलीकरण समय एवं स्थान की गति एवं गहनता से सम्बद्ध है, क्योंकि बाजार, ब्याज दर, भौगोलिक गतिशीलता आदि समय तथा स्थान के उतार–चढ़ाव से जुड़े हुए हैं। यह जुड़ाव सहज नहीं है।'' इस परिभाषा से स्पष्ट होता है कि वैश्वीकरण का सम्बन्ध समय एवं स्थान की गति एवं गहनता से है। समय एवं स्थान में सदैव निरन्तरता नहीं रहती। इसकी गहनता तथा तीव्रता में परिवर्तन होता रहता है। फलस्वरूप वैश्वीकरण में वृद्धि होती है।

आई. वेलरस्टेन के शब्दों में, ''भूमण्डलीकरण वह प्रक्रिया है जिसका कारण पूंजीवाद का विस्तार और उसकी समृद्धि है।'' इससे स्पष्ट होता है–(अ) भूमण्डलीकरण एक प्रक्रिया है, (ब) पूँजीवाद भूमण्डलीकरण का जनक है। यानि भूमण्डलीकरण को आगे बढ़ाने वाली शक्ति तथा इसमें निहित तर्क पूंजीवाद विश्व अर्थव्यवस्था है।

रोजे नाऊ का कहना है, ''विश्व में जो पारस्परिकता तथा अन्तनिर्भरता है उसका कारण तकनीकी तंत्र है। तकनीकी तंत्र ने भौगोलिक तथा सामाजिक दूरियों को कम कर दिया है दूरियों में कमी का कारण कम्प्यूटर, जेट विमान, हवाई जहाज तथा सारे नवीन आविष्कार है। तकनीकी तंत्र के कारण ही वस्तु तथा विचार विश्व के कोने–कोने में पहुंच जाते हैं। तकनीकी तंत्र ने स्थानीय, राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय समुदायों में अन्तर्सम्बन्ध स्थापित किया है।'' इस प्रकार रोजे नाऊ ने वैश्वीकरण को तकनीकी तंत्र से जोड़ा है।

आर. गिलपीन का मानना है कि ''भूमण्डलीकरण राजनीतिक कारकों की उपज है'' इस प्रकार गिलपीन वैश्वीकरण को राजनीतिक कारकों की उत्पत्ति मानते हैं।

उपरोक्त तथ्यों से पता चलता है कि भूमण्डलीकरण एक जटिल अवधारणा है। गिडेन्स एवं हार्वे ने जहाँ इसे समय एवं स्थान के सन्दर्भ में स्पष्ट किया है। वहीं वेलरस्टेन ने पूँजीवाद के संदर्भ में, रोजे नाऊ ने तकनीकी का विकास के रूप में एवं गिलपीन ने शक्ति की राजनीति के आलोक में समझाने का प्रयास किया है। इन तथ्यों के आधार पर यह कहा जा सकता है कि वैश्वीकरण सामाजिक–सांस्कृतिक–आर्थिक एकीकरण की एक प्रक्रिया है। इसमें भौगोलिक सीमाएँ खत्म हो जाती है। विश्व स्तर पर जो बहुराष्ट्रीय कम्पनियाँ कार्यशील हैं उनमें विभिन्न देशों की भागीदारी है। अधिकांश देशों के बीच सामाजिक–सांस्कृतिक दूरी कम होती जा रही है। विश्व एक छोटा गाँव के रूप में परिणत हो रहा है।

सामाजिक संरचना की दृष्टि से समाज में स्त्री पुरूष की संख्या लगभग समान ही कही जा सकती है। नारी की सशक्तीकरण का मतलब है, राष्ट्र का सशक्तीकरण। यदि पुरूष कुण्ठावश अपने को महिलाओं से श्रेष्ठ समझता है तो

यह उसकी भूल है। इतिहास साक्षी है कि हर सफल पुरूष के पीछे किसी न किसी महिला का हाथ रहा है। महिलाओं के विकास व उन्हें शक्ति प्रदान करने के लिए कानून व विधान में अनेक उपाय किए गए हैं। महिलाओं को चाहिए कि वे विकास के हर क्षेत्र में शक्ति का रूप बने किन्तु सम्यक आचरण अपरिहार्य है। भूमण्डलीकरण ने महिलाओं की दशा एवं दिशा को जो रौशनी प्रदान की है, वे निम्नलिखित हैं–

1. प्रारम्भ में महिलाएँ पुरूषों के अधीन थी बिना मर्द की इजाजत के स्त्री एक रूपया खर्च नहीं कर सकती थी, किन्तु समय के साथ स्थिति बदली है, हर परिवार में उसे समान दर्जा प्राप्त है। वह धन कमा सकती है और खर्च भी करने का अधिकार है। महिलाएँ व्यापार, रोजगार, नौकरी आदि करने के लिए स्वतंत्र हैं। कहने का तात्पर्य यह है कि समाज में आर्थिक आजादी एवं सामाजिक स्थिति में महिलाएँ उच्चीकृत हुई हैं।
2. महिलाओं के स्वाभिमान में वृद्धि हुई है। आज किसी भी क्षेत्र में महिलाएँ दब्बू या पिछलग्गू बनकर नहीं रह रही हैं। वे पंचायत से लेकर विधानसभा, लोकसभा तक के चुनाव लड़ रही हैं। जीवन के हर क्षेत्र में उनकी बराबर की भागीदारी है। अपने स्वाभिमान के प्रति महिलाएँ सजग हैं। आयोग तथा महिला उत्पीड़न से सम्बन्धित विभिन्न अधिनियम और कानून इन्हें पर्याप्त संरक्षण दे रहे हैं।
3. रक्षा के क्षेत्र में पुरूषों का एकाधिकार रहा है। परन्तु आज सेना, पुलिस, पी.ए.सी. आदि के क्षेत्रों सेवा प्रदान कर महिलाओं ने इस क्षेत्र में अपनी आवश्यकताओं को महत्व प्रदान किया है।
4. अभी तक यह मान्यता रही है कि देश की आर्थिक प्रगति में केवल पुरूष ही सहायक हैं। उसमें महिलाओं का कोई योगदान नहीं है। इस भ्रम को भी तोड़ने का काम भारतीय नारी ने किया है और आज आर्थिक क्षेत्र में भी महिलाएँ किसी मायने में पुरूषों से पीछे नहीं हैं।

इस प्रकार मेरी दृष्टि में नारी को अबला कहना ठीक नहीं है, बल्कि वह शक्ति रूप है। आज भूमण्डलीकरण के दौर में महिलाओं को आगे बढ़ने के लिए उन्हें खुली छूट हैं। परन्तु कुछ क्षेत्रों में उन्हें अंकुश का सामना करना पड़ता है जो किसी हद तक आवश्यक भी है पर उनके प्रगति में हमें बाधा नहीं उत्पन्न करना चाहिए।

संदर्भ सूची :

1. देसाई, एस.जी. – प्राचीन भारत में प्रगति एवं रूढ़ि, राजस्थान पब्लिशिंग हाउस, 1988
2. प्रमिला कपूर – चेन्जिंग स्टेट्स ऑफ वर्किंग वोमेन इन इण्डिया, 1974
3. एस.सी. दूबे– मैन एण्ड वोमेन रोल इन इण्डिया।